प्रकार्यवादी सिद्धान्त
(Functional Theory)

मैलिनोवस्की (Malinowski), **दुर्खीम** (Durkheim), **पारसंस** (Parsons), **मर्टन** (Merton)

प्रकार्यवादी सैद्धान्तिक परम्परा समाजशास्त्र के उद्‌भव के साथ ही जुड़ी हुई है। प्रकार्यवाद मूलतः **जीवविज्ञान (Biology)** की शब्दावली है। शरीर के प्रत्येक अंग की परस्पर जुड़ने की प्रक्रिया प्रकार्यवाद है। यह कार्य कारण **(Cause Effect)** सम्बन्ध पर आधारित है।

प्रकार्यवाद का प्रारम्भिक स्वरूप **जैविकीय प्रकार्यवाद** था। **डेविस** के अनुसार सम्पूर्ण समाजशास्त्रीय साहित्य का एक-चौथाई भाग प्रकार्यवादी साहित्य है।

एल्विन डब्ल्यू. गाऊल्डनर (Alvin W. Gouldner, 1970) ने अपनी पुस्तक **'The Coming Crisis of Western Sociology'** में प्रकार्यवादी सिद्धान्तों की कटु आलोचना की है। इसे पूँजीपतियों के हितों को संरक्षण देने वाली विचारधारा बताया है। उनका कथन है कि **"प्रकार्यवादी सिद्धान्तवेत्ता खोखले मठाधीश हैं जो गरीबों की छाती पर चढ़कर अमीरों के गुम्बदों को बचाने में लगे हैं।"**

भारत में अधिकांश सामाजिक-मानवशास्त्रीय अध्ययन प्रकार्यवाद से प्रभावित हैं।

प्रकार्यवाद के भेद :

1. सावयवी प्रकार्यवाद (काम्टे)
2. विश्लेषणात्मक प्रकार्यवाद (स्पेन्सर)
3. मानवशास्त्रीय प्रकार्यवाद (ब्राउन, मेलिनोवस्की)
4. समाजशास्त्रीय प्रकार्यवाद (दुर्खीम)

प्रकार्यवादी विचारधारा के अनुसार सामाजिक विश्व एक सम्पूर्ण व्यवस्था है जिसमें सर्वसम्मति (मतैक्य) पाया जाता है। समाज के विभिन्न भाग–शिक्षा, धर्म, राजनीति, अर्थ, कला इत्यादि एक-दूसरे से आनुभविक कार्य कारण सम्बन्धों द्वारा जुड़े रहते हैं। **प्रकार्य (Function) का समाजशास्त्रीय अर्थ परिणाम (Consequence) है।**

समकालीन समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों में प्रकार्यवाद एक अत्यन्त महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय दृष्टि है, जिसमें **पारसन्स, मर्टन और डेविस** सम्मिलित हैं और जो उन आवश्यकताओं एवं पूर्व-आवश्यकताओं के विवेचन पर बल देती है, जो सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व की निरन्तरता को बनाए रखने हेतु आवश्यक है। इसीलिए प्रकार्यवाद के सैद्धान्तिक विवेचन में प्रकार्यात्मक आवश्यकताओं एवं पूर्व-आवश्यकताओं की चर्चा की जाती है। यह इस दृष्टिकोण को भी स्पष्ट करता है कि समाज की प्रत्येक इकाई सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकता को पूर्ण करने हेतु सक्रिय होती है। प्रकार्यवाद को एक सामाजिक सांस्कृतिक प्रघटना के विश्लेषण के संदर्भ में भी परिभाषित किया जाता है; जिसके अन्तर्गत समाज अन्तर्सम्बन्धित इकाइयों की एक ऐसी व्यवस्था के रूप में उभरकर सामने आता है जिसके किसी भी अंग को समग्र से पृथक् किए बिना नहीं समझा जा सकता। **थियोडोरसन एवं थियोडोरसन** इसी आधार पर प्रकार्यवाद को सावयवी व्यवस्था के प्रारूप पर आधारित मानते हैं। इन अन्तर-निर्भर इकाइयों में उत्पन्न होने वाली कोई भी विसंगति समग्र को एक सीमा तक असन्तुलित कर देती है।

प्रकार्यवाद में मुख्य रूप से निम्नलिखित तीन तत्वों पर बल दिया जाता है–

1. व्यवस्था के विभिन्न अंगों में अन्तरसम्बद्धता अथवा अन्तरनिर्भरता।
2. व्यवस्था के विभिन्न अंगों में सन्तुलित स्थिति का पाया जाना जिसकी तुलना एक सामान्य सन्तुलित सावयव से की जा सकती है।
3. व्यवस्था के विभिन्न अंगों की भूमिकाओं के ये विभिन्न पक्ष जो व्यवस्था में सामान्य स्थिति को बार-बार उत्पन्न करते हैं और उन्हें पुनर्संगठित करते हैं।

प्रत्येक प्रकार्यवादी विचारक इस तर्क को स्वीकारता है कि समाज में सदैव पुनर्संगठन को स्थापित करने वाली वे इकाइयाँ सक्रिय रहती हैं जो बार-बार सन्तुलन को स्थापित करती हैं। ये अपने विवेचन में

Scanned with CamScanner

मूल्य-एकमतता की चर्चा भी करते हैं। अर्थात् प्रत्येक इकाई की नैतिकता के प्रति प्रतिबद्धता है। प्रकार्यवाद के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण में सर्वाधिक योगदान **स्पेन्सर, पैरेटो** एवं **दुर्खीम** का है; जबकि सामाजिक मानवशास्त्र के क्षेत्र में **मैलिनोवस्की** एवं **ब्राउन** का।

कॉम्टे, स्पेन्सर एवं **पैरेटो** सामाजिक व्यवस्था में विभिन्न अंगों की अन्तरनिर्भरता को, जबकि **दुर्खीम** एकीकरण या एकता को महत्त्व प्रदान करते हैं।

कॉम्टे, प्रकार्यवाद का उल्लेख सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक गत्यात्मकता के सन्दर्भ में करते हैं। **स्पेन्सर** की विभेदीकरण की अवधारणा उन्हें प्रकार्यवाद के निकट लाती है। जिसमें पारस्परिक निर्भरता के तत्व महत्वपूर्ण हैं। जबकि पैरेटो जैव रासायनिक प्रणाली के द्वारा प्रकार्यवाद का विवेचन करते हैं। पैरेटो ने व्यक्ति के हितों, आवश्यकताओं और संवेदनाओं को प्रकार्यवादी विश्लेषण का महत्वपूर्ण तत्व माना है, क्योंकि इनसे सामाजिक व्यवस्था निर्मित होती है। आधुनिक प्रकार्यवाद के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान **दुर्खीम** का है, जिन पर **कॉम्टे** का प्रभाव तथा दुर्खीम का प्रभाव **ब्राउन** एवं **मैलिनोवस्की** पर स्पष्टतः दिखाई देता है। **ब्राउन** जहाँ संरचना के पक्ष पर बल देते हैं, वहीं **मैलिनोवस्की** सामाजिक संस्थाओं के प्रकार्यों का विश्लेषण करते हैं। समकालीन समाजशास्त्र में **पारसन्स, मर्टन, गोफमैन, पीटर बर्जर** एवं **कालिन्स** पर दुर्खीम का प्रभाव प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

प्रकार्यवाद के क्षेत्र में दुर्खीम द्वारा प्रस्तुत एकीकरण की अवधारणा के पक्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जिसके अन्तर्गत सामाजिक नियमन को बनाए रखने हेतु सामाजिक इकाइयों के महत्व को स्वीकारा गया है। **दुर्खीम** एकीकरण अर्थात् **सामाजिक एकता** को सामाजिक सन्तुलन बनाए रखने हेतु आवश्यक मानते हैं। **'The Rules of Sociological Method'** में दुर्खीम के विचार धर्म एवं शिक्षा तथा श्रम विभाजन सम्बन्धी परिणामों से सम्बद्ध उनका चिन्तन प्रकार्यवाद की मुख्य धारा को व्यक्त करता है। **'The Elementary Forms of Religious Life'** में जब दुर्खीम यह तर्क देते हैं कि आदिम जनजातियों में धर्म सामान्य मूल्यों एवं अस्मिता को स्थापित कर एकीकरण स्थापित करने की सर्वाधिक प्रभावशाली शक्ति बन जाती है, प्रकार्यवाद को स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण आधार बन जाता है।

इन दृष्टिकोणों को **मैलिनोवस्की** एवं **ब्राउन** ने अपने प्रकार्यवादी चिन्तन में प्रयुक्त किया है। मैलिनोवस्की सर्वप्रथम प्रकार्यात्मक शब्द को विश्लेषण के एक प्रकार के रूप में प्रयुक्त करते हैं। **मैलिनोवस्की** का सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं एवं उनसे सम्बद्ध प्रकार्यों से है। उनका मत है कि सभी समाज व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं उनकी कार्य-कारणता पर बल देते हैं। किसी भी समाज में मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जिस परिवेश को निर्मित करता है उसे मैलिनोवस्की संस्कृति की संज्ञा देते हैं। वे ये तर्क देते हैं कि सामाजिक विकास की प्रक्रिया जहाँ एक तरफ संरचनाओं में विभंदीकरण को उत्पन्न करती हैं, वहीं प्रकार्यों के क्षेत्र में यह विशिष्टीकरण को जन्म देती है। इस दृष्टि से **मैलिनोवस्की** संस्कृति को सृजनात्मक क्रियाओं की उपलब्धि के रूप में स्थापित करते हैं। संस्कृति के सृजन का प्रारम्भ मैलिनोवस्की के अनुसार जैविकीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के प्रयासों से होता है। ठीक इसी प्रकार सहयोगमूलक सम्बन्धों को निर्मित करना तथा विभिन्न क्रियाओं, मूल्यों, प्रतिमानों एवं संस्तुतियों को अपने जीवन का अंग बनाना, मनुष्य की एकीकरण सम्बन्धी आवश्यकता है, जिन्हें संतुष्ट करने हेतु संस्कृति की व्यवस्था को निर्मित किया गया है।

मैलिनोवस्की सामाजिक क्रियाओं की प्रकार्यवादी व्याख्या में **प्रवृत्तियों, कृत्यों** और **संतुष्टि** के तत्वों पर बल देते हैं और जब ये तीनों तत्व सक्रिय होते हैं तथा सामाजिक इकाइयाँ सन्तुष्टि को परिणाम के रूप में ग्रहण करती हैं, तो सन्तुलन की स्थिति अस्तित्त्व में आती है। उनकी दृष्टि में प्रत्येक सामाजिक प्रघटना का इस परिप्रेक्ष्य में किया गया मूल्यांकन प्रकार्यवादी चिन्तन को दर्शाता है।

बी. मैलिनोवस्की (B. Malinowski, 1884-1942)

- पौलेण्ड मूल के अंग्रेज मानवशास्त्री, मूलतः गणितज्ञ एवं भौतिकविद्। जैम्स फ्रेजर की पुस्तक **'The Golden Bough'** को पढ़कर वे मानवशास्त्र की ओर आकर्षित हुए।
- मैलिनोवस्की सामाजिक मानवशास्त्र के संस्थापकों में से एक माने जाते हैं। ब्राउन के समकालीन।
- आपने **हरबर्ट स्पेन्सर** को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है।
- मैलिनोवस्की ने समाज को तीन स्तरों पर देखा है—जैविकीय, संरचनात्मक और प्रतीकात्मक।

Scanned with CamScanner

- जैविकीय एवं मनोवैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर ही मैलिनोवस्की को ब्राउन से अलग माना जाता है।
- इन पर दुर्खीम का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।
- मैलिनोवस्की की सैद्धांतिक विचारधारा को **शुद्ध प्रकार्यवाद** (Pure functionalism) कहा जाता है।
- **Functoinal Universals, Functional Needs** तथा **Functional Indispensibility** आदि अवधारणाएँ मैलिनोवस्की से सम्बन्धित हैं।
- आप लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (LSE) की प्रथम स्थापित सामाजिक मानवशास्त्र की पीठ के प्रथम प्रोफेसर बने।
- मैलिनोवस्की ने **सहभागी अवलोकन** (Participatory Observation) पद्धति के माध्यम से जनजातियों का मानवशास्त्रीय अध्ययन किया।
- इनके प्रसिद्ध अध्ययनों में–**ट्रोब्रियांडा द्वीप समूह** (न्यूगिनी) के मातृवंशीय लोगों का अध्ययन तथा **मैलेनेशियाई** लोगों का अध्ययन शामिल है।
- मैलिनोवस्की के अनुसार संस्कृति हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। आपने मानव की सात मूल आवश्यकताएं बताई है–1. पोषण (Nutrition), 2. प्रजनन (Reproduction), 3. आराम (Comfort), 4. स्वास्थ्य (Health), 5. सुरक्षा (Safety), 6. गति (Movement) एवं 7. वृद्धि (Growth)

मैलिनोवस्की की चर्चित पुस्तकें :

1. Argonauts of the Western Pacific (1922)
2. Crime & Custom in Savage Society (1926)
3. Sex & Repression in Savage Society (1927)
4. Freedom & Civilization.
5. A Scientific Theory of Culture.

इमाइल दुर्खीम (Emile Durkheim, 1858-1917)

- स्पेन्सर के बाद दुर्खीम ने ही **संरचना** एवं **प्रकार्य** नामक अवधारणाओं को प्रचलित बनाया।
- समाजशास्त्र को एक पृथक् विषय (Discipline) के रूप में स्थापित करने वाले मूर्धन्य समाजशास्त्री।
- आगस्ट कॉम्टे के बौद्धिक उत्तराधिकारी।
- समाजशास्त्र के प्रथम प्रोफेसर एवं प्रथम अकादमिक समाजशास्त्री।
- समाजशास्त्रवाद (Sociogolism) या समूहवाद नामक विचारधारा के जनक।

दुर्खीम की प्रमुख कृतियाँ :

1. The Division of Labour in Society (1893)
2. The Rules of Sociological Method (1895)
3. Suicide (1897)
4. The Elementary Forms of Religious Life (1912)
5. Primitive Classification (with Mauss) (1903)

दुर्खीम के चिन्तन को समाजशास्त्रीय सामूहिकतावाद, समाजशास्त्रीय यथार्थवाद या समाजशास्त्रवाद की संज्ञा दी जाती है। जो सामूहिकता को महत्त्व देता है और समूह के अस्तित्त्व को व्यक्ति के स्थान पर प्रतिस्थापित करता है। जिस प्रकार स्पेन्सर ने सन्तुलन के तत्व को यौद्धिक और औद्योगिक समाजों में बल दिया है ठीक उसी प्रकार दुर्खीम ने भी यान्त्रिक और सावयवी एकता पर आधारित समाजों में सन्तुलनकारी प्रारूप पर बल दिया हैं।

दुर्खीम समाज के सन्तुलनकारी प्रारूप की व्याख्या अपने विभिन्न सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों के अन्तर्गत करते हैं। **सामूहिक प्रतिनिधान** की अवधारणा की सामाजिक तथ्य के संदर्भ में व्याख्या उनके इस प्रारूप का प्रारम्भिक बिन्दू है। **बाह्यता, बाध्यता** और **सामान्यता** की विशेषताएँ इस तथ्य की परिचायक हैं कि समस्त सामाजिक प्रघटनाएं एक व्यवस्था के क्रम के अन्तर्गत समाज में क्रियाशील होती हैं। दुर्खीम जब सामान्य और व्याधिकीय तथ्यों की विवेचना करते हैं तब उनके संतुलनकारी प्रारूप का संकेत स्पष्ट हो जाता है।

स्पेन्सर की भाँति **दुर्खीम** भी समाज के वर्गीकरण में उद्विकासीय प्रणाली की उपस्थिति को महत्व देते हैं। इनका मत है कि जनसंख्या के आयतन और घनत्व में वृद्धि समाज को समरूपता से जटिलता की तरफ अग्रसर करती है। ये यान्त्रिक एकता एवं सावयवी एकता पर आधारित समाज में क्रमशः दमनकारी कानून, सामान्य, चेतना एवं निर्भरता पर आधारित सलर श्रम विभाजन तथा जटिल संरचनात्मक विभेदीकरण संविदात्मक कानून, अमूर्त नैतिक संहिता,

Scanned with CamScanner

5. सावयव की निरन्तरता को बनाए रखने में सहायक जीवशास्त्रीय या सामाजिक **कार्य प्रणालियों** के रूप में प्रकार्य। प्रकार्य के इस अर्थ को दुर्खीम, मैलिनोवस्की, ब्राउन एवं क्लूखोन (Durkheim, Malinowski, Brown and Klukhon) आदि स्वीकारते हैं।

मर्टन तर्क देते हैं कि एक अवधारणा के रूप में प्रकार्य अनेक शब्दों से सम्बन्धित है–उपयोग, उपयोगिता, इरादा, लक्ष्य, प्रेरणा, परिणाम इत्यादि। इन पक्षों का उल्लेख करने के बाद मर्टन उन पक्षों का उल्लेख करते हैं जो मुख्य रूप से ब्राउन, मैलिनोवस्की एवं क्लूखौन से सम्बन्धित हैं। इन आलोचनात्मक पक्षों को प्रकार्यात्मक विश्लेषण के तत्वों की संज्ञा दी जाती है। मर्टन ने समाज में **प्रकार्यात्मक एकता, सार्वभौमिक प्रकार्यवाद** तथा **प्रकार्यात्मक अपरिहार्यता** के तत्वों को विवेचित किया है।

प्रकार्यात्मक एकता के तत्व को **ब्राउन, मैलिनोवस्की एवं क्लूखोन** ने प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। इनका मानना है कि समाज में उत्पन्न होने वाली प्रत्येक सामाजिक इकाई प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से एकता एवं सन्तुलन को निरन्तरता प्रदान करती है। किन्तु **मर्टन** का मत है कि इस तर्क को स्थापित करने के लिए कोई पर्याप्त अनुभाविक आधार नहीं है। जैसे–धर्म जहाँ एक तरफ सन्तुलन उत्पन्न करता है वहीं दूसरी तरफ अनेक सामाजिक विसंगतियाँ भी उत्पन्न करती है।

सार्वभौमिक प्रकार्यवाद का तत्व इस तर्क पर आधारित है कि अनेक तत्व समाज में प्रत्येक स्तर पर पाए जाते हैं जिन्हें स्तरीकृत सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्वरूपों की संज्ञा दी जा सकती है और इन सबके योगदान किसी-न-किसी रूप में सकारात्मक प्रकृति के होते हैं। मर्टन का मत है कि कोई भी प्रघटना या स्वरूप सार्वभौमिक नहीं है बल्कि यह स्थान समाज एवं संस्कृति विशिष्ट होता है।

अपरिहार्यता के बारे में **मर्टन** का मत है कि प्रत्येक समाज गत्यात्मकता के कारण विकल्पों को निर्मित करने हेतु प्रेरित या बाध्य होता है। अर्थात् कोई भी तत्व अपरिहार्य नहीं होता बल्कि कभी-न-कभी उसका रूपान्तरण सम्भव है।

इन तीनों तर्कों के आधार पर **मर्टन** प्रकार्यवादी विश्लेषण का विषद स्वरूप प्रस्तुत करते हैं और उन तीनों के तर्कों से असहमति व्यक्ति करते हैं जो प्रकार्य के सैद्धान्तिक विश्लेषण को संकीर्ण दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार कर चुके थे।

पारसन्स ने प्रकार्यवादी विश्लेषण के इन पक्षों और विचारधाराई पक्षों को महत्व देते हुए इसे मार्क्सीय चिन्तन से गुणात्मक रूप से भिन्न पाया। उनका मत है कि यदि प्रतिरोधी शक्तियाँ अस्तित्व में न रहें तो एकता का तत्व किसी भी समय समाज के लिए समस्यामूलक हो सकता है।

इस तर्क की चर्चा करते हुए मर्टन समाजशास्त्र में प्रकार्यवादी विश्लेषण के ग्यारह महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करते हैं। इसे प्रकार्यवादी विश्लेषण का **Paradigm** कहा जाता है। इसमें निम्नलिखित पक्ष सम्मिलित हैं–

1. वे तत्व जिनके साथ **प्रकार्य को अनिवार्यतः सम्बद्ध** किया जाता हैं। जैसे–सामाजिक भूमिका, सामाजिक प्रतिमान, सामाजिक प्रक्रियाएँ, समूह, संगठन, संस्थागत स्वरूप, सांस्कृतिक स्वरूप, सामाजिक संरचना, संस्कृति से स्वरूप ग्रहण करने वाली भावनाएँ, सामाजिक नियन्त्रण के साधन आदि।
2. विषयपरक उद्देश्यों की अवधारणा : इसके अन्तर्गत समाज वैज्ञानिक किसी सामाजिक व्यवस्था से सम्बद्ध व्यक्तियों के उद्देश्यों और उनकी प्रेरणाओं पर बल देते हैं।
3. वस्तुपरक परिणामों की अवधारणा : इसमें मर्टन ने **प्रकार्य, प्रकट एवं अप्रकट प्रकार्य** तथा **अकार्य** का उल्लेख किया है।

मर्टन के लिए **प्रकार्य** वे अवलोकनीय परिणाम हैं जो सामाजिक व्यवस्था में अनुकूलन और सामंजस्य को बढ़ाते हैं, जबकि **अपकार्य** (Dysfunction) इन्हें कम करता है।

अकार्य (Non-Function) वे स्थितियाँ हैं जो किसी भी समाज में किसी भी स्तर पर तटस्थ रह सकती है।

प्रकट प्रकार्य (Manifest Function) प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने वाले वस्तुपरक परिणाम हैं जो सामाजिक व्यवस्था में अनुकूलन एवं समायोजन लाते हैं तथा उस व्यवस्था से सम्बद्ध सदस्यों द्वारा मान्य, इच्छित और स्वीकृत होते हैं, जबकि अप्रकट प्रकार्य (Latent Function) सदस्यों द्वारा मान्य, इच्छित और स्वीकृत नहीं होते।

मर्टन प्रकार्यवाद में स्तरीकरण के तत्व को भी पर्याप्त महत्व देते हैं। वे मानते हैं कि समाज की

Scanned with CamScanner

- आपने सामाजिक क्रिया के दो स्वरूप बताए हैं :
  1. तार्किक क्रिया (Logical Action)
  2. गैरतार्किक क्रिया (Non Logical Action)
- गैरतार्किक क्रियाओं को पैरेटो ने **अपशिष्ट चालक** (Residues) तथा **भ्रांत तर्क** (Derivatives) के रूप में प्रस्तुत किया है।
- पैरेटो ने अवशिष्ट चालकों के 6 प्रकार बताए हैं। जिन्हें उचित ठहराने के लिए जो अतार्किक अवैज्ञानिक तर्क दिए जाते हैं उन्हें वे भ्रांत तर्क कहते है।
- समाज में प्रायः गैरतार्किक क्रियाएँ देखी जा सकती है।
- इनकी पुस्तक **Sociological Writings** (1966) में पैरेटो के क्रियावादी विचारधारा का विस्तार निहित है।

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद : मीड, ब्लूमर

प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद (Symbolic Interctionsim)– प्रतीक की परिभाषा करते हुए **डॉ. राधाकमल मुखर्जी** ने लिखा है कि "प्रतीक संचार के साधन होते हैं, जोकि चिन्हों एवं उपायों से बनते हैं, जिनके द्वारा व्यक्ति न केवल अन्य व्यक्तियों के लिए वस्तुओं के रूप में संदर्भित होते है, अपितु अन्य व्यक्तियों के विचारों, मूल्यों और अनुभवों को भी ग्रहण करते हैं और उनके पारस्परिक विनिमय और अन्तः-प्रवेश में सहायक होते है। "इस दृष्टि से प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद का जीवन के विचारों और भावों की अन्तःक्रिया से है। सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से सामाजिकता की सीख लेता है। जन्म लेने के पश्चात् ही विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से बच्चा हँसना, रोना, खेलना, भाषा इत्यादि अन्य के सम्पर्क से प्रतीकों के माध्यम दैनिक आचार-व्यवहार, परिवार, देश, राष्ट्र से सम्बन्धित अनेक प्रतीक उसे समाजीकरण में सहायक होते हैं। धर्म, व्रत, त्योहार, वेशभूषा से सम्बन्धित पूजा पद्धतियाँ त्योहारों के प्रतीक अलग-अलग अवसरों पर वेशभूषा के प्रतीक राष्ट्रगीत, राष्ट्रध्वज इत्यादि की प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया समाजीकरण की एक विशिष्टता से जुड़ी हुई है।

हरबर्ट ब्लूमर ने प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया शब्द मनुष्यों में होने वाली विशिष्ट विशेषता वाली अन्तःक्रिया से सम्बन्धित है।" **एम. फ्रांसिस अब्राहम** इसे और स्पष्ट करते हैं कि **"प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद अपना ध्यान अन्तःक्रिया की प्रकृति, सामाजिक क्रिया एवं सामाजिक सम्बन्ध के गतिशील प्रतिमानों पर केन्द्रित करता है।"** इस प्रकार प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद एक सामाजिक–मनोवैज्ञानिक प्रत्यय है जोकि व्यक्ति और समाज के पारस्परिक सम्बन्धों को अन्तःक्रिया के माध्यम से स्पष्ट करता है।

मौलिक रूप में **हरबर्ट ब्लूमर** ने 1969 में प्रकाशित अपनी पुस्तक **'Symbolic Interactionism : Perspectives and Method'** में इसकी व्याख्या की है किन्तु चूँकि इसका सम्बन्ध मानवीय मन और मस्तिष्क के साथ सामाजिक मनोविज्ञान की विषय वस्तु से है अतः अवधारणा के रूप में **जेम्स डी. वी. थॉमस, कूले** एवं **मीड की रचनाओं** में भी इसे स्पष्ट किया गया है। सामाजिक मनोवैज्ञानिक अन्तःक्रियावादी व्यक्ति के मन का सम्बन्ध सामाजिक अन्तःक्रिया से जोड़ते हैं। अन्तःक्रिया के माध्यम से सोचने और समझने की क्षमता का विकास होता है। **इसमें प्रतीकों का विशेष महत्व होता है, क्योंकि इन्हीं के माध्यम से लोगों की समझ विकसित और परिपक्व** होती है। प्रतीकों के माध्यम से व्यक्ति पारस्परिक अन्तःक्रिया के माध्यम से जहाँ अपने मनोभावों को दूसरों के सम्मुख प्रस्तुत करता है वहीं उनके मनोभावों को स्वयं भी ग्रहण करता है। इस दिशा में **सी. एच. कूले** का **'स्व दर्पण सिद्धान्त'** विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि लोग परस्पर एक-दूसरे के बारे में क्या कल्पना करते हैं। उनकी अन्तःक्रियात्मक प्रतिक्रिया ही व्यक्ति की स्वयं की इमेज होती है।

प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद के सिद्धान्त के विकास में अमेरिकी समाज वैज्ञानिकों का विशेष योगदान है। इसके अग्रणीय विचारकों में **चार्ल्स हर्टन कूले, हरबर्ट मीड, ब्लूमर, कोहन** तथा **गोफमैन** के नाम प्रमुख हैं।

प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावादी सिद्धान्त के विकास में **कूले** की तुलना में मीड का योगदान कहीं अधिक है। वैज्ञानिक दृष्टि से इसे विकसित करने के रूप में भले ही **ब्लूमर** का नाम लिया जाता है, लेकिन मीड की पुस्तक **'Mind, Self and Society'** में इस सिद्धान्त के विभिन्न पक्षों को अवधारणात्मक रूप से स्पष्ट किया गया है। उन्होंने मन, स्व और समाज के बारे में प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया की सामाजिक पद्धति को कुछ प्रमुख विशेषताओं के आधार पर स्पष्ट किया है।

1. **मीड** के अनुसार स्व मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया न होकर एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसकी उत्पत्ति

Scanned with CamScanner

- आपने सामाजिक क्रिया के दो स्वरूप बताए हैं :
  1. तार्किक क्रिया (Logical Action)
  2. गैरतार्किक क्रिया (Non Logical Action)
- गैरतार्किक क्रियाओं को पैरेटो ने **अपशिष्ट चालक** (Residues) तथा **भ्रांत तर्क** (Derivatives) के रूप में प्रस्तुत किया है।
- पैरेटो ने अवशिष्ट चालकों के 6 प्रकार बताए हैं। जिन्हें उचित ठहराने के लिए जो अतार्किक अवैज्ञानिक तर्क दिए जाते हैं उन्हें वे भ्रांत तर्क कहते हैं।
- समाज में प्रायः गैरतार्किक क्रियाएँ देखी जा सकती है।
- इनकी पुस्तक **Sociological Writings** (1966) में पैरेटो के क्रियावादी विचारधारा का विस्तार निहित है।

Scanned with CamScanner